साहित्य-सुजस

भाग–1

(राजस्थानी गद्य–पद्य संग्रै)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर कांनी सूं कक्षा 11 रै राजस्थानी साहित्य विसय सारू स्वीकृत पाठ्यपोथी

संयोजक अर सम्पादक

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग

राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

सम्पादक–मण्डल

डॉ. लक्ष्मीकान्त व्यास

व्याख्याता, राजस्थानी विभाग

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय

अजमेर

डॉ. माधोसिंह इन्दा

व्याख्याता

राजकीय महाविद्यालय

बाली (पाली)

विजय कुमार पारीक

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

काम्बा (जालोर)

डॉ. शिवराज भारतीय

व्याख्याता राजस्थानी

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

बिरकाळी (हनुमानगढ़)

नरसिंह सोढ़ा

व्याख्याता

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

बज्जू (बीकानेर)

2017–2018

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पाठ्यक्रम समिति

संयोजक

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

सह–संयोजक

डॉ. लक्ष्मीकान्त व्यास

सदस्य

विजय कुमार पारीक

डॉ. शिवराज भारतीय

नरसिंह सोढ़ा

आखड़ी

भारत म्हारौ देस छै। सगळा भारतवासी म्हारा भाई–बैन छै। म्हनै म्हारा देस सूं गाढौ हेत अर म्हनै इणरी अखूट हेमांणी माथै अणूंतौ गुमेज छै।

म्हैं म्हारा माईत, गरू अर सगळा बडेरां रौ आघ–मांन करूंला अर अेकूका मिनख सागै मिनखीचारा रौ वैवार करूंला।

म्हैं म्हारा देस अर देसवासियां वास्तै गाढौ नेह राखण री आखड़ी लेवूं। म्हारौ हरख–उमाव फगत वांरै कल्यांण अर आसूदाई में छै।

© प्रकासक रै हित मांय सगळा अधिकार सुरक्षित

संस्करण : 2017–18

पड़तां :

मोल (अंकां मांय) :

(सबदां मांय) :

प्रमाणित कर्‌यौ जावै कै इण पोथी री छपाई मांय बोर्ड कांनी सूं दिरीज्यै अेच.पी.सी. रौ 58 जी.अेस.अेम. वाटर मार्क क्रीम वॉव अर 130 जी.अेस.अेम. पूठै रौ कागद बरतीज्यौ है।

छापाखांनौ :

दो सबद

पढेसरी सारू पाठ्यपोथी विगतवार अध्ययन, साखीणी, पारखा अर अगाऊ अध्ययन रौ आधार होया करै। विसय–वस्तु अर भणाई री दीठ सूं इस्कूली पाठ्यपोथी रौ स्तर घणौ महताऊ होय जावै। पाठ्यपोथ्यां नै कदैई जड़ कै महिमामंडित करण वाळी नीं बणावणी चाईजै। पाठ्यपोथी आज ई भणाई, उणरी विधि अर प्रक्रिया रौ अेक जरूरी साधन बण्योड़ौ है, जिण री आपां अणदेखी नीं कर सकां।

लारलै केई बरसां मांय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान रै पाठ्यक्रम मांय राजस्थान री भासाऊ अर सांस्क्रतिक थितियां री नुमाइंदगी रौ अभाव लखावै हौ। इण नै दीठगत राखतां थकां राज्य सरकार कांनी सूं कक्षा 9 सूं 12 तांई रा पढेसरुवां सारू माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर रै मारफत पाठ्यक्रम लागू करण रौ निरणै लिरीज्यौ है। इणी निरणै मुजब बोर्ड कांनी सूं भणाई–सत्र 2017–2018 सूं कक्षा 9 अर 11 री पाठ्यपोथ्यां बोर्ड रै तेवड़ीज्योड़ै पाठ्यक्रम रै आधार माथै त्यार कराईजी है। भरोसौ है कै अै पोथ्यां पढेसरुवां मांय सफींटवै सोच, चिंतन अर अभिव्यक्ति रौ अवसर देवैला।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

संयोजकीय

राजस्थानी री ओळखाण मुलकां चावी है। आ अेक स्वतंत्र भासा है। घणा मोटा पसरयोड़ा भूखेत्र में इणनै बोलण वाळां री गिणती आठ करोड़ सूं बेसी होवैला। दो लाख नैड़ा सबदां रौ सबदकोस, अखूट साहित्य भंडार, इणरी लिपियां (मुडिया अर आज रै बगत में देवनागरी), व्याकरण री इधकाई रै सागै मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ोती, ढूंढाड़ी, वागड़ी, मालवी, मेवाती, सेखावाटी, तोरावाटी, गोढवाड़ी जैड़ी इणरी बोलियां अर उपबोलियां इणनै अेक स्वतंत्र अर सबळ भासा रौ दरजौ देवै। भारत री दूजी भासावां सूं राजस्थानी री आपरी निकेवळी विसेसता रै पाण आ निस्चै ई अेक सिमरथ भासा है। इणमें अेक अरथ रा अनेक सबद (पर्याय) अर अेक सबद रा अनेक अरथ वाळा सबदां री माठ है। इणरै लोक–साहित्य में लोकजीवण रा सगळा रंग निजर आवै, तौ अभिजात्य साहित्य री लूंठी बपौती इण भासा नै सुघड़–सबळ बणावै। 1300 बरसां रै राजस्थानी साहित्य रै इतिहास नै अध्ययन री दीठ सूं प्राचीन, मध्यकाल अर आधुनिक काल रै रूप में बांटीज्यौ है। कक्षा 11वीं रै पाठ्यक्रम में आधुनिक काल री 28 नैड़ी रचनावां लिरीजी है। पाठ्यक्रम नै सुगम सरल बणावण रा ध्येय नै राखतां अै रचनावां लिरीजी है। इण सूं विद्यार्थी राजस्थानी भासा रै सरल–सरूप सूं रूबरू होसी।

साहित्य–सुजस (भाग–1) नांव री इण पोथी में आधुनिक गद्य री खास विधावां अर काव्य री केई प्रवृत्तियां नै सामल करीजी है। आं रचनावां में सामाजिक सरोकार, जीवन–मूल्यां, जीवन–आदर्शां नै उकेरीज्यौ है। जीवन रै हरेक पख नै आपरै ढाळै कैवती अै रचनावां जुगबोध करावै, सावचेती री सीख देवै।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर रै सैयोग अर अपणायत सारू सम्पादक मंडल उणां रौ आभारी है। आ अंजस री बात है कै बोर्ड में राजस्थानी साहित्य ऐच्छिक विसय रै रूप में पढायौ जा रैयौ है। बोर्ड रै इण मत्तै (निरणै) सारू घणा रंग। इण पोथी नै पढनै विद्यार्थी साहित्य रौ ग्यान अर आछा संस्कारां नै अंगेज'र सन्मार्ग माथै चालैला, इणीज आस अर विस्वास रै साथै, मंगळ कामनावां।

–डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

⌘

विगत

भूमिका

पोथीमाळ रा पुहुप — *डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत* — 7

गद्य खण्ड

इकाई : अेक

कहाणी

बरसगांठ — *मुरलीधर व्यास* — 11
उडीक — *डॉ. नृसिंह राजपुरोहित* — 16
कांचळी — *रामेश्वरदयाल श्रीमाळी* — 23
थे बारै जावौ — *करणीदान बारहठ* — 29

इकाई : दो

निबन्ध

चाटू — *सौभाग्यसिंह शेखावत* — 34
भेळप, सैंणप अर भाईचारौ — *मूळदान देपावत* — 39
राजस्थान री लोककलावां — *डॉ. महेन्द्र भानावत* — 45
पर्यावरण रा पागोथिया — *डॉ. कृष्णलाल विश्नोई* — 51

इकाई : तीन

अेकांकी

आपणौ खास आदमी — *बैजनाथ पंवार* — 58
देसभगत भामासा — *डॉ. आज्ञाचंद भंडारी* — 65

इकाई : चार

संस्मरण

सुरजो नायक — *डॉ. नेमनारायण जोशी* — 71

इकाई : पांच

रेखाचितरांम

मक्खणसा — *श्रीलाल नथमल जोशी* — 80

इकाई : छः

यात्रा–संस्मरण

म्हारी जापान–यात्रा — *राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत* — 89

इकाई : सात

रिपोर्ताज

अेक दिन आपरौ — *विनोद सोमानी 'हंस'* — 97

पद्य खंड

इकाई : आठ

दूहा अर सोरठा

वीर सतसई	*सूर्यमल्ल मीसण*	102
चेतावणी रा चूंगट्या	*केसरीसिंह बारहठ*	105
द्रौपदी विनय	*रामनाथ कविया*	109
चतुर चिन्तामणी	*बावजी चतुरसिंह*	113

इकाई : नौ

कविता

जुद्ध	*सत्यप्रकाश जोशी*	116
मानखौ	*गिरधारी सिंह पड़िहार*	120
'जुगवांणी' अर 'हेत चाईजै' 'ईश्वर!', 'राम–नाम'	*गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'*	125
'साच'र झूठ!', 'निराकार!'	*कन्हैयालाल सेठिया*	130
सैनाणी	*मेघराज 'मुकुल'*	134
'लू' अर 'बादळी'	*चन्द्रसिंह*	139
दुर्गादास	*डॉ. नारायण सिंह भाटी*	143

इकाई : दस

गीत

सीखड़ली	*कानदान 'कल्पित'*	147

इकाई : इग्यारा

लोकगीत

बधावौ		152

परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य रौ इतियास : कूंकूं पगल्यां सूं आभै तांई 158

राजस्थानी व्याकरण–रचना– समानारथी अर विलोम सबद, मुहावरा अर ओखांणा, उल्थौ 176

राजस्थानी छंद अर अलंकार– दूहा छंद, वैणसगाई अलंकार 186

भूमिका

पोथीमाळ रा पुहुप

राजस्थानी साहित्य जुगां जूनौ नै मुलकां चावौ। सूरां, सतवादियां, सापुरुसां अर सन्तां री इण भोम रौ साहित्य इण बात री साख भरै। राजस्थानी साहित्य री आ मोटी विसेसता कै अठै रौ साहित्यकार गढ–कोटां सूं लेय'र झूंपड़ियां में रैवण वाळा वीरां, सामधरमी सूरमावां रौ जस आखरां अमर कियौ है। मायड़ भासा राजस्थानी नै मान देवणियौ तौ राजस्थानी साहित्यकार ई है। इण पोथी में अखूट साहित्य भंडार री बात 'परिशिष्ट' में करीजी है। इणरै जूनै काळ सूं लेय'र आज तांई री साहित्य सिरजणा माथै केई–केई ग्रन्थ लिखिया जाय सकै। सूरापै रा तेज सूं राती–माती इण भोम रा असल रुखाळा तौ कलम रा धणी कवेसर हा। उणां री लेखणी री धार, बोलां रा बाण सस्त्रां सूं कमती नीं हा। मारग भूल्योड़ा नै सन्मारग लावणौ, कर्तव्य रौ पाठ पढावणौ, भड़खाणी ओज भरी वाणी में कविता कर वीरता नै पोखणै रौ सुकाज आं कवेसरां कर्‌यौ।

राजस्थानी कवि आं सबदां तणी साख कविता नै लेय'र हरेक बगत में जूझ्यौ है। बगत रा बायरा सागै उणरी कविता पण नूंवा मारग सोधती रैयी। कवि आपरी सोच अर ऊंडी दीठ सूं सबदां री कोरणी मांडै। पोरैदार बण'र आखरां रा परकोटा बिचाळै मानखै रा म्हैल अखी राखण रा जतन करै। दुरसा आढा अर पृथ्वीराज राठौड़ रणांगण सूं लेय'र अंतरजामी री अरदास करता वीरता, भगती अर सिणगार रौ काव्य रच्यौ। मीरां री भगती रा अमरफळ आज लग उणां रा पदां रै रूप में मानखै रै कंठां नै सरस करै। बांकीदास जी आसिया रौ ओज भर्‌यौ आजादी रौ संखनाद करतौ 'डिंगळ गीत', सूर्यमल्ल मीसण री 'वीर सतसई' रा दूहा तौ कापुरुसां री भूंड, सापुरुसां री बडाई, वीर नारी री मनगत रा ओजस्वी बोल, कायरां उर सालण वाळा है। रामनाथ कविया री 'करुण बहत्तरी' में आज रै जुग री नारी री दसा–दिसा, उणरी हूंस, उणरी सगती अर आपै री बात करै। क्रान्तिकारी कवि केसरीसिंह बारहठ रा काळजै छेकला करण वाळा आकरा बोलां सूं मेवाड़ रौ हिन्दुवा सूरज गरीजतौ रैयग्यौ तौ उणी'ज मेवाड़ी राजघराणा रा बावजी चतुरसिंह री सादगी ग्यान, बैराग, धरम, नीति, उपदेस वाळा चतुराई रा बोल हियै मंडग्या। ऊमरदान लाळस रौ वौ खरोपण अर संकरदान सामौर रा गोळी हंदा गीतड़ा। आजादी रा रुखाळा, स्वतन्त्रता सेनानियां में जयनारायण व्यास, माणिक्यलाल वर्मा, हीरालाल सास्त्री, भैरवलाल 'काळा बादळ', विजयसिंह 'पथिक' रा लोकमानस में चावा लोकगीतां री तरज माथै बण्योड़ा चेतावणी रा गीत मानखै नै सावचेत करता। गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' अर रेवतदान चारण रौ वौ ओज अर चेतना रा अमर सुर आज लग गाईजै। रेवतदान चारण रा बोल कै 'चेत मानखा चेत, जमानौ चेतण रौ आयौ', उस्ताद अेकर तौ कैवै 'मुलक नै मोट्यारां माथा देणा पड़सी' अर दूजी बार कैवै कै 'मिनखां मर जावौ हासल मत दीजौ' औ कांई? बगत अर जन री पीड़ सूं सरोकार साजता कवि री मनगत अळूझाड़ अर छटपटाट ई तौ है। वौ ईज उस्ताद जनकवि बण साची बात कैवण में चूक नीं करै अर जन–जन रै मन हेत–अपणायत री बात करै। कन्हैयालाल सेठिया 'धरती धोरां री' रच'र राजस्थानी जीवण–दरसण रै साथै मानखै नै अध्यात्म ग्यान दियौ– आपरी नूंवी कविता सैली

में, नूंवै भावबोध साथै ईस्वर अर संसार री लौकिक व्याख्या सरल सबदां में करै। मेघराज मुकुल 'सैनाणी' रै रूप में उणीज वीर परम्परा रै त्याग अर बलिदान नै याद करावै। राजस्थानी वीरांगना रौ अलायदौ रूप इण मांय चित्रित होयौ है। आपरौ सीस बाढ'र सैनाणी देवण वाळी नारी (हाडी राणी) अेक राजस्थानी वीरांगना ई होय सकै।

सत्यप्रकाश जोशी री कवितावां सांस्क्रतिक रचाव, बसाव अर बणगट री दीठ सूं आज अर काल नै जोड़ती लागै। 'जुद्ध' कविता में कवि 'राधा' नै लोकनायिका बणाय मानखै नै सांति रौ संदेस देवै। कवि गिरधारी सिंह पड़िहार 'मानखौ' लिख'र मिनखपणै नै उबारणी चावै। सुभद्रा री दया, मया अर वीरता रै साथै विणासकारी जुद्ध सूं होवण वाळी हाण नै अेकर फेर ढाबण रा जतन कवि करै।

'सैनाणी' री वीर नारी आपरौ माथौ बाढ'र कर्तव्य री सीख देवै। जुद्ध कविता री राधा प्रेम री डोर में कृष्ण नै बांध'र फौजां नै पाछी मोड़ण री खैचल करै। 'मानखौ' री सुभद्रा वीरोचित भावां सूं मानखै नै उबारण रौ, उणरी रिछ्या रौ प्रण लेवै। नारायण सिंह भाटी रचित 'दुर्गादास' सूरवीरता, सामधरम अर आन–मान–मरजाद रौ रूखाळौ बण आपरौ जस आखरां अमर करै। कु. चन्द्रसिंह प्रकृति प्रेमी रैया। राजस्थानी प्रकृति काव्य में घणोई सिरजण होयौ, उणमें चन्द्रसिंह री 'बादळी' मरुधरा माथै बरसै तौ मरुवासी उणरा विध–विध वारणा लेवै। बादळी बरस नै जीवण देवण वाळी है, पण राजस्थान रौ वासी तौ 'लूवां' रा आकरा सभाव नै ई हंसतौ–हंसतौ अंगेजै। बसंत रुत री सगळी प्राकृतिक सोभा 'लूवां' नै भेंट चढावतां उणां रौ स्वागत करै– आ है राजस्थानी संस्क्रति री ओळखाण। राजस्थानी संस्क्रति री बात जद आवै तौ राजस्थानी लोकगीतां नै कियां भूलीजै। मरुधर रा चावा गीतकार कानदान 'कल्पित' री 'सीखड़ली' रा मरमपरसी भाव लोकगीतां री परम्परा नै जींवती राखै, तौ लोकगीत 'बधावौ' कुळ मरजादा में बंध्योड़ी सीलवंती, लजवंती कुळबहुवां रा मनोभावां नै उजागर करै। गीत में दिरीजण वाळी ओपमावां में मरजादा री लिछमण रेखा निजर आवै, वा ई राजस्थानी संस्क्रति री माठ है।

साहित्य री खास बात है मांयली पकड़ अर राजस्थानी रचनाकारां में आ हथोटी भरपूर रैयी है। जठै कठैई मिनखीचारै री साख जावती दीखै तौ अठै रौ साहित्यकार कलम नै हथियार बणाय'र मानखा रूपी करसण रौ निदाण करै। राजस्थानी रचनाकार काळजा बायरा मिनखां में हेत–अपणायत रौ रूंखड़ौ हरियल बण लैरावतौ रैवै, इणरा सदीव जतन करतौ रैयौ है।

मुरलीधर व्यास री कहाणी 'बरसगांठ' में हेठलै तबकै री जीवाजूण रौ मारमिक चित्राम उकेरीज्यौ है। ब्याजखोरी री सामाजिक बैमारी जैड़ी केई अबखायां इण समाज में देखीजै, केई कुरीतां परम्परावां बण'र मानखै नै चींथती निजर आवै। सगळी विसंगतियां रौ वरणन राजस्थानी साहित्य में होयौ है। नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी 'उडीक' मां रै वास्तै टाबर रै अछेह हेत री बानगी है। 'मां कैयां मूंडौ भरीजै' उणीज मां री जगै खाली होवै तौ उण टाबर रौ जीवण कित्तौ दोरौ होवै, पछै उडीक तौ मिनख रै धीरज री पारख करावै। 'उडीक' री मारमिकता रै पछै रामेश्वर दयाल श्रीमाळी री 'कांचळी' में कित्ती मानवी संवेदना है, आपणी संस्क्रति रा अेक पख नै उकेरती 'कांचळी' कहाणी रिपियां रौ समाज में जोर अर आपणचार नै निबळौ बतावै। 'कांचळी' रौ बटकौ समधा रै वास्तै घणमोलौ हौ, उणरी कीमत प्रेम हौ, अपणायत ही, पण पुसबा री निजरां में साव सस्तौ। करणीदान बारठ री कहाणी 'थे बारै जावौ' दो पीढियां अर

दो न्यारी–न्यारी अवस्थावां रौ चित्राम है जिणमें अेक ई मिनख बगत रै साथै कित्तो असहाय, लाचार होय जावै जिकौ कदैई घर रौ मालिक हौ। खुद रा गोडा चालै जित्तै सब कोई पूछै, पछै टाबर ई बूढा माइतां नै बोझ समझण लागै। टाबरां रौ माइतां रै वास्तै अैड़ौ भाव संस्कारां रौ नास करतौ दीखै। बूढापौ तौ सब नै आवणौ ई है। सासू वाळी ठीकरी बहू रै त्यार रैवै। आपां रै पारिवारिक ढांचै माथै करारी चोट है। साहित्यकार री कलम में जोर है, वो लिख छूटै। दारोमदार तौ मानण वाळां माथै है।

कृष्णलाल विश्नोई पर्यावरण माथै लेख लिख प्रकृति संचेतना री सीख देवै तौ महेन्द्र भानावत राजस्थानी लोककलावां मूरत्यां, मांडणा, फड़ां, भांत–भांतीला रमतिया भलांई माटी रा होवौ कै लकड़ी रा बणायोड़ा, कसीदा कारीगरी, मैंदी–गूदणां रौ नामी वरणन कर आं रै पेटै होवण वाळा घरेलू उद्योगां नै बधावण री बात करै। कला–संस्क्रति रौ सोना अर सवागा वाळौ मेळ है। अै कलावां आपणी सांस्क्रतिक थाती है। उणां नै रुखाळणी घणी जरूरी है। मूळदान देपावत रौ निबन्ध अेकर फेर आपणी संस्क्रति रा रुखाळा संस्कारां री बात करै। भेळप सूं रैय'र भाईचारै री ओळखाण करावै। भेळा रैयां रा मोह उपजै। मोह सूं प्रेम बधै, हेत सूं मानखौ पोखीजै। सरसीज्योड़ा मानखा सूं समाज आगै बधै। सौभाग्यसिंह शेखावत 'चाटू' निबन्ध में मिनख रौ अैड़ौ फोटू खैंचै कै पढणियां नै चाव तौ आवै, पण कठैई–कठैई खुद माथै संकौ होवण लागै। मिनखां री झूठी बडायां कर चाटू हरेक ठौड़ आपरी ठौड़ बणाय ई लेवै। निबन्ध जथारथ रै घणौ नैड़ौ है। नाटक अर अेकांकी रै मिस साहित्यकार साची बातां री पैरवी करतौ समाज नै सांपरतेक निजरां देखावणी चावै। सुणणा अर देखणा में घणौ फरक होवै। गांवां में होवण वाळी रम्मतां अर रामलीला नै आपां कित्ता चाव सूं देखता, सूर्यकरण पारीक रौ 'बोळावण' नाटक रौ छोटौ रूप है। इणमें वचनां रौ पालण, सरणै आया री रिछ्या रौ भाव है। अै आपणी संस्क्रति रा थांबा है। वचनां रौ बंधियौ अर सरणै आयोड़ां री रिछ्या रौ प्रण लेय'र अठै रौ वीर सपूत जुगां–जुगां लग जीवण सूं जूझतौ रैयौ है। उणां रै त्याग–बळिदान रौ जस इण अेकांकी में है। 'देसभगत भामासा' अेकांकी डॉ. आज्ञाचन्द भंडारी री है। 'भामासा' रौ नांव कुंण नीं जाणै जकौ महाराणा प्रताप नै आपरौ धन देय'र उणां री अबखी पुळ में मदत करी ही। आज ई देस में दानदातावां नै 'भामासा' री उपमा दिरीजै। 'भामासा' योजनावां प्रदेस अर देस में चालै, जिणरै पेटै जरूतमंद मानखै री आर्थिक मदत करीजै। साहित्यकार तौ देखै वौ ईज मांडै। आपरै जीवण री मूंघमोली घड़ियां में मैसूस करयोड़ी आछी–भूंडी सगळी बातां उणरै अंतस में रैवै। आखरां उकेरीज'र वै संस्मरण बण जावै। नेमनारायण जोशी रौ 'सुरजो नायक' जित्तौ उरजावान है बित्तौ ई नसेड़ी है। नसौ करण सूं कांई नुकसाण होवै, मिनख रा सगळा गुण नसौ खाय जावै, आ बात सांम्ही आवै। आज री युवा पीढी नै आ बात समझण री घणी दरकार है। श्रीलाल नथमल जोशी रौ रेखाचित्राम 'मक्खणसा' व्यक्तिगत गुणां रौ खुलासौ है। औ पाठक नै मनोरंजक लागै, पढतां–पढतां मक्खणसा रौ दीठाव अंतस री निजरां में होयां बिना नीं रैवै। राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ जात्रा संस्मरण 'म्हारी जापान जात्रा' पढणजोग है। मानवी संवेदना जगावण वाळौ औ जात्रा संस्मरण हिरोसिमा री विणासकारी लीला साथै सांति मार्च री रंगीली छिब उकेरण वाळौ है। रिपोर्ताज जैड़ी गद्य विधावां ई राजस्थानी में लिखीजी है। इणरी ओळखाण करावै विनोद सोमानी 'हंस' रौ 'अेक दिन आपरौ'। अेक नौकरीपेसा आदमी रौ छुट्टी रौ दिन कीकर बीतै, उणरौ पूरौ लेखौ–जोखौ अेक रिपोट रै रूप में रोचक ढंग सूं

बताईज्यौ है। बात नै राखण रौ अेक ढब होवणौ चाईजै। दिन री सरुआत सूं लेय'र आखिर तांई आपरै साथै कांई–कांई घटित होयौ उणरौ वरणन ई रिपोर्ताज है। राजस्थानी गद्य री विधावां मांय सूं कीं टाळवी रचनावां पाठ्यक्रम में राखीजी है।

राजस्थानी पद्य अर गद्य री अै रचनावां राजस्थानी साहित्य री दीठ सूं अर भासा री दीठ सूं तौ विद्यार्थियां वास्तै लाभकारी है ई, इणरै साथै उणां रै व्यावहारिक ग्यान में बधोतरी करैला।

इण पोथी रै सम्पादन में म्हारै साथै काम करणिया सम्पादक मंडल रौ आभार मानूं कै टैमसर आपौ–आपरौ काम म्हनै सूंपियौ। म्हारा पति महिपालसिंह अमरावत नै घणा रंग कै वै इण काम सारू पूरौ सैयोग कर म्हारी हूंस बधाई। म्हारा विद्यार्थी डॉ. नमामीशंकर आचार्य अर डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र रौ ई सैयोग सारू आभार। आगै ई आप सगळां रौ सैयोग मिळतौ रैवैला। आ पोथी विद्यार्थियां रै ग्यान नै पोखै, इणी आस अर भरोसै रै साथै।

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत
अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर